प्रश्न : “ ‘में’ है वही मुक्त नहीं है, ‘में’ से मुक्त है वही मुक्त है ” इस बात को समजाने की कृपा करे।

जब भी कोई ‘में’ से जुड़ा हो तब वो बँधा हुवा है, क्योंकि ‘में’ अलग है और ‘में’ को जानने वाला अलग है, पर जब में को जानने वाला ‘में’ के साथ जुड़ जाता है तब वो ‘में’ से बंध जाता है, यह ‘में’ के जानने वाले के स्वभाव के अनुरूप नहीं है, इसलिए जब कोई ‘में’ से बँधा है तो वो ‘में’ ही हो जाता है, पर ‘में’ के साथ बँधने वाला ‘में’ से मुक्त हो सकता है, ‘में’ से बंध ने वाला ‘में’ के साथ कॉन्स्टंट नहीं है, इसलिए हम यह कह सकते की ‘में’ है वही मुक्त नहीं है, क्योंकि जो ‘में’ से बंधता है वो सारी दुनिया से बंध जाता है और जो ‘में’ से मुक्त हो गया वो सारी दुनिया से मुक्त हो जाता है, इसलिए जब कोई ‘में’ से मुक्त है वही मुक्त है पर जब कोई ‘में’ के साथ जुड़ता है तो वो स्वभावगत ‘में’ से मुक्त है पर जब तक ‘में’ जुड़ा है तब तक वो मुक्त नहीं है।

Aasthit